भिन्न-भिन्न देवलोकों को जाते हैं। उदाहरणस्वरूप, सूर्योपासक सूर्यलोक में प्रवेश करता है तथा चन्द्रोपासक को चन्द्रलोक की प्राप्ति होती है। तदनुरूप, इन्द्रादि देवताओं की उपासना के अभिकांक्षी को वही-वही देवलोक मिल सकता है। यह सत्य नहीं कि किसी भी देवता की आराधना करने से भगवत्प्राप्ति हो सकती है । इस धारणा के निराकरण के लिए भगवान् ने यहाँ स्पष्ट किया है कि देवोपासकों को यथाधिकार प्राकृत-जगत् के भिन्न-भिन्न लोकों की प्राप्ति होती है, जबकि भगवद्भक्त साक्षात् परमलोक—भगवद्धाम को जाते हैं।

यह तर्क किया जा सकता है कि यदि देवता श्रीभगवान् के विश्व (विराट्) रूप के अंग-प्रत्यंग हैं, तो देवताओं की उपासना से उसी लक्ष्य (श्रीभगवान्) की प्राप्ति हो जानी चाहिए । अपने इस तर्क से देवोपासक निश्चित रूप में अल्पज्ञ सिद्ध होते हैं, क्योंकि वे इतना भी नहीं जानते कि शरीर के किस अंग में भोजन पहुँचना चाहिए । उनमें से अधिक मूढ़ तो यहाँ तक कहते हैं कि भोजन ग्रहण करने के योग्य बहुत से अंग हैं जिनमें भोजन पहुँचाने की बहुत सी विधियाँ हैं। यह कहना अधिक बुद्धिसंगत नहीं है । क्या कोई कर्णरन्ध्रों अथवा नेत्रों के माध्यम से देह में भोजन पहुँचा सकता है? साधारण मनुष्य नहीं जानते कि ये देवता श्रीभगवान् के विराट् रूप के भिन्न-भिन्न अंग हैं। इस अज्ञानवश वे प्रत्येक देवता को स्वतन्त्र ईश्वर और परमेश्वर श्रीकृष्ण का प्रतिस्पर्धी मानने की भूल कर बैठते हैं।

देवता ही नहीं, साधारण जीव भी श्रीभगवान् के अंश हैं। श्रीमद्भागवत में कथन है कि ब्राह्मण विश्वरूप श्रीभगवान् के शीर्ष हैं, क्षत्रिय भुजदण्ड हैं, इत्यादि। ये सब भिन्न-भिन्न कार्य करते हैं। वर्ण-स्थिति चाहे कुछ भी हो, जो यह जानता है कि देवता और वह, दोनों श्रीभगवान् के भिन्न-अंश हैं, उसका ज्ञान पूर्ण है । जो यह नहीं जानता, उसे नाना प्रकार के देवलोकों की प्राप्ति होती है । भक्त की गति इससे भिन्न है ।

देवताओं के वरदान से मिलने वाले फल नश्वर हैं, क्योंकि इस प्राकृत-जगत् के लोक, देवता और उनके उपासक आदि सभी कुछ अनित्य हैं। इस श्लोक में स्पष्ट किया गया है कि देवोपासना से उत्पन्न सब फल नश्वर हैं। अतएव इसमें सन्देह नहीं कि अल्पज्ञ जीव ही देवोपासना करेगा। दूसरी ओर, कृष्णभावनाभावित भक्तियोगी शुद्ध भक्त को सच्चिदानन्दमय जीवन मिलता है। इससे सिद्ध हुआ कि उसकी और साधारण देवोपासकों की उपलब्धियों में गम्भीर अन्तराल है। भगवान् श्रीकृष्ण निरवधि हैं, उनकी करुणा-कृपा की भी अवधि-परिधि नहीं है। अपने शुद्ध भक्तों पर वे नित्य-निरन्तर अशेष कृपा-सुधा-कादम्बिनी का परिवर्षण करते रहते हैं।

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम्।।२४।।

अव्यक्तम्=अप्रकट (से); **व्यक्तिम्**=आकार को; **आपन्नम्**=प्राप्त हुआ;